27

जब मसीही लोग प्रार्थना करते हैं

(8:1-6)

अध्याय 6 में हमने पहली छह मुहरें जल्दी-जल्दी खुलते देखीं। फिर हमने पृथ्वी पर परमेश्वर के लोगों को मुहर लगते देखकर और फिर स्वर्ग में सिंहासन के सामने आनन्द करते हुए अध्याय 7 का एक महत्वपूर्ण चक्कर लगाया था। अन्त में, अध्याय 8 में हम विचार की मूल रेखा में वापस आ जाते हैं और सातवीं मुहर को खुलते देखते हैं।

अध्याय 8 की पहली छह आयतें कई उद्देश्यों को पूरा करती हैं:

(1) वे पुस्तक के दूसरे भाग को समेटती हैं (4:1-8:5);

(2) वे पुस्तक के तीसरे भाग में ले जाती हैं (8:6-11:19);

(3) उन में घबराए हुए मसीही लोगों के लिए आशा का विशेष संदेश है।

सातवीं मुहर के खुलने पर चर्चा करते हुए हम पहले उद्देश्य पर बात करेंगे, और बाद में हम विस्तार से देखेंगे कि इन आयतों में सताए जाने वाले मसीहियों के लिए क्या आशा थी। परन्तु अध्ययन के बीच जाने से पहले हमें एक पल के लिए दूसरे उद्देश्य अर्थात पुस्तक के तीसरे भाग में ले जाने पर ध्यान देना आवश्यक है।

तैयारी का उद्देश्य (8:1, 2)

अध्याय आरम्भ होता है, ''और जब उसने सातवीं मुहर खोली, तो स्वर्ग में आधे घण्टे तक सन्नाटा छा गया। और मैंने उन सातों स्वर्गदूतों को, जो परमेश्वर के सामने खड़े रहते हैं, देखा, और उन्हें सात तुरहियां दी गईं'' (आयतें 1, 2)। सातवीं मुहर खुलने के बाद सात तुरहियां बजीं, वैसे ही जैसे बाद में पुस्तक में सातवीं तुरही बजने से क्रोध के सात कटोरों के उण्डेलने के लिए मंच तैयार होगा (अध्याय 15 और 16)।

तुरहियों के बाद सातवीं मुहर ही नहीं खुली, बल्कि उन्हें सातवीं मुहर के मुख्य कार्य के रूप में जाना गया होगा।[1] फ्रैंक पैक ने सुझाव दिया है कि ''सात तुरहियों के पूरे समूह में सातवीं मुहर की बातें हैं।''[2] जिम मैक्गुई ने जोर दिया है कि सातवीं मुहर में सात तुरहियां: और सातवीं तुरही में सात कटोरे हैं।'' उसकी यह मूल रूपरेखा इस प्रकार सुझाई है:

I. पहली मुहर
II. दूसरी मुहर
III. तीसरी मुहर
IV. चौथी मुहर
V. पांचवीं मुहर
VI. छठी मुहर
VII. सातवीं मुहर
    क. पहली तुरही
    ख. दूसरी तुरही
    ग. तीसरी तुरही
    घ. चौथी तुरही
    ङ. पांचवीं तुरही
    च. छठी तुरही
    छ. सातवीं तुरही
        1. पहला कटोरा
        2. दूसरा कटोरा
        3. तीसरा कटोरा
        4. चौथा कटोरा
        5. पांचवां कटोरा
        6. छठा कटोरा
        7. सातवां कटोरा[3]

सात मुहरों, सात तुरहियों, और सात कटोरों के बीच में कई चौंकाने वाली समानताएं हैं: सभी सात, चार, और तीन के समूहों से बने हैं (प्रत्येक शृंखला में पहले चार चिह्न एक दूसरे से अधिक मेल खाते हैं और अन्तिम तीन एक दूसरे से अधिक अलग हैं)। ''तीनों वृत्तांतों में वही आधार है, जिसमें एक दूसरे से मेल खाती जानकारी है और कई बार बहुत ही मिलती-जुलती है।''[4] इसके अलावा सभी परमेश्वर की सामर्थ पर ज़ोर देने वाले एक जैसे शब्दों से समाप्त होते हैं (8:5; 11:19; 16:18-21)।

इसका अर्थ यह नहीं है कि तीनों भाग हर बात में एक दूसरे से मेल खाते हैं, इसलिए उनकी आवश्यकता नहीं है। ''तीनों शृंखलाओं की अपनी-अपनी विषय-वस्तु''[5] और ज़ोर है। भाग तर्कसंगत रूप से आगे बढ़ते हैं।[6] उनका बढ़ना इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है:

(1) मुहरें तोड़ी जाती हैं: प्रकाशितवाक्य।

(2) तुरहियां बजाई जाती हैं: चेतावनी।

(3) क्रोध के कटोरे उण्डेले जाते हैं: दण्ड।

प्रत्येक शृंखला का मूल संदेश वही रहता है कि नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है और वह सब कुछ ठीक कर देगा!

प्रार्थना की सामर्थ (8:1-6)

अब हम अपने पाठ की मुख्य बात में आ गए हैं। 8:1-6 का अध्ययन आरम्भ करते हुए मैंने यह अनुमान लगाया था कि तैयारी का महत्व मुख्य होगा: परमेश्वर इस भाग का इस्तेमाल सात तुरहियों के बजने के लिए हमारे मनों को तैयार करने के लिए करता है; यानी वैसे ही आपको और मुझे किसी भी उपयोगी कार्य को करने के लिए तैयारी की आवश्यकता है। यह विषय-वस्तु उपयोगी है, परन्तु जैसे-जैसे मैंने इन आयतों का अध्ययन किया वैसे वैसे मैं इन आयतों में पाई जाने वाली प्रार्थना की शक्तिशाली शिक्षा से प्रभावित हुआ था। ''जब मसीही लोग प्रार्थना करते हैं'' तो क्या होता है, पर इस प्रकार मेरे विचार हैं।

स्वर्ग सुनता है (आयत 1)

इस आयत का आरम्भ सातवीं मुहर के खुलने से होता है: ''और जब उसने सातवीं मुहर खोली, तो स्वर्ग में आधे घण्टे तक सन्नाटा छा गया'' (आयत 1)।

प्रकाशितवाक्य में अन्य विवरणों की तरह इस विवरण से भी हम में से कई लोग चकित हो जाते हैं। जब से हम स्वर्ग के सिंहासन में यूहन्ना के पीछे जा रहे हैं (4:1, 2) हमारे मानसिक कानों में ज़ोर-ज़ोर की आवाज़ें आती हैं। अध्याय 4 और 5 में हमने स्वर्गीय भजन सुना था। अध्याय 6 में हमने घोड़ों की टाप, शहीदों की पुकारें और संसार के धमाके अलग होकर उड़ते सुने थे। अध्याय 7 अब तक के सबसे बेहतरीन भजन से खत्म होता है। उन अध्यायों में लगभग सब को ''ऊंचे स्वर'' में बोलते या गाते बताया गया था (5:2, 12; 6:10; 7:2, 10)।

अचानक वहां सन्नाटा छा गया, ऐसा कि पत्ता गिरने पर भी आवाज़ आए।[7] यह सन्नाटा ''आधे घण्टे'' तक छाया रहा। आधा घण्टा तब तक समय की लम्बी अवधि नहीं है जब तक आप कुछ घटने के लिए किसी की प्रतीक्षा न कर रहे हों। यदि आपको अपने बच्चे को अस्पताल ले जाना हो, और आपको डॉक्टर के मुंह से कुछ सुनने की प्रतीक्षा करनी हो तो आधा घण्टा ऐसे लगेगा, जैसे पूरा जीवन बीत गया है। आगे होने वाली घटनाओं को देखने की प्रतीक्षा करते हुए यूहन्ना के लिए वे स्वर्गीय तीस मिनट ऐसे लग रहे होंगे, जैसे अनन्तकाल है।[8]

टीकाकारों को ''आधे घण्टे तक'' वाक्यांश का सांकेतिक महत्व समझ में नहीं आता। वे दुखी होते हैं कि ''इसका क्या *अर्थ* है?'' बेहतर सवाल यह होगा कि ''इस विवरण में इससे क्या उद्देश्य पूरा होता है?'' संगीतकार ''ठहराव'' कहलाने वाले प्रतीकों का इस्तेमाल करते हैं। जब कोई गायक या संगीतकार ठहराव पर आता है, तो वह ठहराव द्वारा संकेत दिए गए समय की अवधि के लिए रुकता है[9] यानी वह उस समय के लिए शान्त हो जाता है। मैंने कभी किसी को यह पूछते नहीं सुना है कि ''संगीत में शान्त होने का क्या *अर्थ* है?''

बल्कि हमें इस बात की समझ है कि वहां पर खामोशी कुछ *करने* के लिए, यानी संगीत के प्रभाव को बढ़ाने तथा गाने के आनन्द को बढ़ाने के लिए है। इसी प्रकार, 8:1 में सन्नाटे का मुख्य उद्देश्य आने वाले प्रकाशनों के पूर्वाभास को बढ़ाना होगा।[10]

कुछ लोग सन्नाटे में अतिरिक्त उद्देश्य का प्रस्ताव देते हैं। जी. आर. बिसले-मुर्रे ने लिखा है कि संदर्भ से ''स्वर्ग में खामोशी का उद्देश्य मिलता है। आयत 2 के बाद की आयतों में *प्रार्थना का विषय-वस्तु हावी है।*... यह कि सन्नाटा इस सारे ठहराव के दौरान प्रार्थनाओं की गम्भीरतापूर्वक सुना जाने के लिए है।''[11] विलियम बार्कले ने लिखा है:

> पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं ऊपर परमेश्वर के पास जाने को हैं; और हो सकता है कि इसमें विचार यह हो कि स्वर्ग में सब कुछ ठहर जाता है, ताकि पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं सुनी जा सकें। यहां तक कि स्वर्ग का संगीत और प्रकाशन की गरज तक खामोश हो जाती है, ताकि परमेश्वर के कानों में उस पर भरोसा रखने वाले दीन लोगों की धीमी से धीमी प्रार्थन पहुंच सकें।[12]

फ्रैंक पैक सहमत थे कि ''प्राचीनों और चारों प्राणियों के साथ स्वर्गदूतों की सेना द्वारा की जाने वाली महिमा बन्द हो जाती है, ताकि उन पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं जो धरती पर हैं, सुनी जा सकें।''[13]

आप आपत्ति कर सकते हैं, ''परन्तु परमेश्वर को अपने लोगों की बात सुनने के लिए खामोशी की आवश्यकता नहीं है।'' यह सही है, पर याद रखें कि यह सांकेतिक है। जब कोई व्यक्ति, जिसका हम सम्मान करते हों, बात कर रहा हो तो हम चाहते हैं कि उसकी बात सुनने के योग्य माहौल हो। यानी हम जो कुछ कर रहे होते हैं वह करना बन्द कर देते हैं, बच्चों को खामोश होने के लिए कहते हैं, रेडियो या टेलीविज़न बन्द कर देते हैं। वैसे ही परमेश्वर का स्वर्ग और पृथ्वी दोनों को चुप करा देना सांकेतिक तौर पर है, ताकि वह अपने पवित्र लोगों की बात अच्छी तरह सुन सके।[14] यह तस्वीर मेरे मन को छू लेती है। यूजीन पीटरसन ने लिखा है:

> हम शोरगुल भरे संसार में रहते हैं। हम पर चिल्लाया जाता, प्रोत्साहित किया जाता, हमें बुलाया जाता है। हमारे आस पास टैलिफोन, रेडियो, टेलीविज़न, स्टीरियो का शोर है। संदेश बहरा कर देने वाली आवाज़ से बढ़ाए जाते हैं। संसार ऐसी भीड़ है जिसमें हर कोई एक साथ बात कर रहा है और कोई सुनने को तैयार या इस योग्य नहीं है। परन्तु परमेश्वर सुनता है। ... हमारी बात को सुनना उसका हम से बात करने से भी बड़ा आश्चर्य है। ...
>
> प्रार्थना में हमारी हर बात, हर आह, हर फुसफुसाहट, हकलाहट भरी हर कोशिश सब सुनी जाती है। पूरा स्वर्ग खामोश हो जाता है। स्वर्गदूतों की ऊंची आवाज़, तुरही के भेदक संदेश, सिंहासन के गर्जते गीत खामोश हो जाते हैं, जब परमेश्वर सुनता है।[15]

तीस या इससे कुछ अधिक मिनटों के सन्नाटे का अर्थ यही हो या न, परन्तु इन पूरी आयतों से *यही* घोषित होता है कि परमेश्वर अपने विशेष लोगों की प्रार्थनाओं को सुनता है। ''उस समय के हों या आज के, परेशान पाठकों से यूहन्ना यही कह रहा है कि स्वर्ग में उनकी प्रार्थनाएं सुनी जाती हैं और उनका उत्तर मिलेगा। अनुग्रहकारी और न्यायी परमेश्वर न तो मुर्दा है, न बहरा और न उदासीन।''[16]

यह अद्‌भुत सच्चाई कि परमेश्वर अपने लोगों की सुनता है, पूरी बाइबल में मिलती है। नीतिवचन यही कहता है कि ''यहोवा ... धर्मियों की प्रार्थना सुनता है'' (15:29)। परमेश्वर ने सुलैमान को बताया था, ''जो प्रार्थना गिड़गिड़ाहट के साथ तू ने मुझ से की है, उसे मैं ने सुना है'' (1 राजा 9:3क)। उसने हिजकिय्याह के पास संदेश भेजा, ''मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं'' (2 राजा 20:5ख)। परमेश्वर विश्वासी लोगों की प्रार्थनाएं और याचनाएं आज भी सुनता है। पतरस ने लिखा है, ''क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उसकी विनती की ओर लगे रहते हैं'' (1 पतरस 3:12क)। यूहन्ना ने माना, ''और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है'' (1 यूहन्ना 5:14)। ''आरम्भिक मसीही की प्रार्थना की विशेष बात इसका सुना जाना [था]।''[17]

यह जानना अद्‌भुत नहीं है कि जब हम प्रार्थना करते हैं तो स्वर्ग सुनता है?

स्वर्ग प्रसन्न होता है (आयतें 3, 4)

इन आयतों में यह भी घोषणा है कि मसीही लोग जब प्रार्थना करते हैं तो स्वर्ग में आनन्द होता है।

आयत 2 में सात स्वर्गदूतों को[18] सात तुरहियां दी गई थीं; परन्तु उन्हें तुरही बजाने की अनुमति दिए जाने से पहले, दृश्य में एक और स्वर्गदूत आ गया:[19]

> फिर एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिए हुए आया, और वेदी के निकट खड़ा हुआ, और उसको बहुत धूप[20] दिया गया,[21] कि सब पवित्र लोगों की[22] प्रार्थनाओं के साथ उस सोने की उस वेदी[23] पर जो सिंहासन के सामने है चढ़ाए। और उस धूप का धुआं पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं सहित[24] स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के सामने पहुंच गया (आयतें 3, 4)। (धूप दान के पास एक स्वर्गदूत का चित्र देख।)

यह प्रतीक पुराने नियम से लिया गया है: सोने की वेदी तम्बू में परम पवित्र स्थान के अन्दर धूप की वेदी को कहा गया था (निर्गमन 30:1–8)। यह सोने से ढकी लगभग तीन फुट लम्बी, और लगभग आठ फुट चौड़ी लकड़ी की छोटी वेदी थी। एक धूपदान (जिसे धूपदानी कहा जाता है) वेदी के ऊपर रखा जाता था, और धूपदान में धूप जलाई जाती थी।

यह पवित्र स्थान को परम पवित्र स्थान से अलग करने वाले पर्दे के बिल्कुल सामने थी।[25]

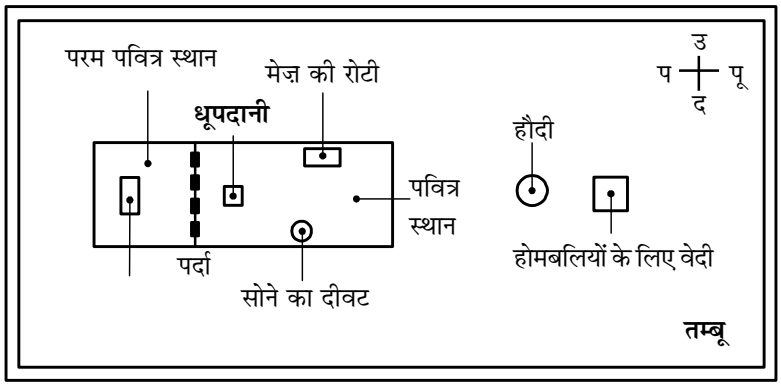

ठहराये हुए समयों पर याजक तम्बू के बाहर पीतल की वेदी (होमबलियों के लिए वेदी) पर धूपदान ले जाता था (देखें लैव्यव्यवस्था 16:12; गिनती 16:46 भी देखें[26])। फिर वह धूपदान और सुगंधित धूप परम पवित्र स्थान में ले जाता, धूपदान को सोने की वेदी पर रखता और धूप को कोयलों पर बिखेर देता (देखें लैव्यव्यवस्था 10:1)। शीघ्र ही मीठी महक पवित्र स्थान में भर जाती जो परम पवित्र स्थान में भी चली जाती। परम पवित्र स्थान में वाचा का संदूक था,[27] जिसके ऊपर प्रायश्चित का ढंकना अर्थात वह स्थान था, जहां परमेश्वर ने अपने लोगों से मिलने की प्रतिज्ञा की थी (देखें निर्गमन 25:17–22; 26:34)। यहूदी विचारधारा के अनुसार स्वयं परमेश्वर की उपस्थिति में महक होती है।[28]

लगभग आरम्भ से ही, सोने की वेदी पर जलाई जाने वाले धूप का सम्बन्ध परमेश्वर के पास ऊपर जाने वाली प्रार्थना की अवधारणा से जुड़ा है। दाऊद ने लिखा था, ''मेरी प्रार्थना तेरे सामने सुगंध धूप'' (भजन संहिता 141:2क) ठहरे। मन्दिर बन जाने के बाद, धूप जलाने की दिन में दो बार की परम्परा के समय (निर्गमन 30:7, 8) यहूदी लोग प्रार्थना के लिए स्त्रियों के आंगन में इकट्ठे होते थे। लूका 1 में जकर्याह मन्दिर में धूप जलाने के लिए गया हुआ था (आयतें 5, 8, 9, 11), जब ''लोगों की सारी मण्डली बाहर प्रार्थना कर रही थी'' (आयत 10)। धूप और प्रार्थनाओं को एक दूसरे की जगह मिलाने का रूपक आरम्भिक मसीहियों के लिए विशेष यहूदी पृष्ठभूमि वाले मसीहियों के लिए कोई नई बात नहीं होगी।[29]

प्रकाशितवाक्य 5 में चौबीस प्राचीनों को ''धूप से भरे हुए सोने के कटोरे'' लिए दिखाया गया है, जिन्हें ''पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं'' कहा गया था (आयत 8)। अध्याय 8 में तस्वीर थोड़ी बदल जाती है: यहां हम पढ़ते हैं कि धूप पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं में *जोड़ी गई* और फिर ''उस धूप का धुआं पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं *सहित* स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर तक पहुंच गया'' (आयतें 3, 4)। प्रार्थनाओं और धूप के बीच अन्तर करना हो, तो धूप को मसीह और पवित्र आत्मा की विनती के संकेत के रूप में लिया जा सकता है (रोमियों 8:26, 34; इब्रानियों 7:25; 1 यूहन्ना 2:1 भी देखे)। लियोन मौरिस का अवलोकन है, ''प्रार्थना अकेला कार्य नहीं है जो यह अक्सर लगता है। स्वर्गीय सहायता है जिससे हमारी

प्रार्थनाएं परमेश्वर के पास पहुंचती हैं।''[30]

वेदी और धूप की चर्चा में जो बात हम यहां कहना चाह रहे हैं उसे कम न होने दें कि जब मसीही लोग प्रार्थना करते हैं, तो स्वर्ग में आनन्द होता है! पुराने नियम की भाषा में, धूप की महक परमेश्वर को पसन्द थी;[31] वैसे ही आपकी प्रार्थनाएं उसकी नज़र में हैं। ''वह सीधे लोगों की प्रार्थना से प्रसन्न होता है'' (नीतिवचन 15:8ख)। जब आप प्रार्थना करते हैं तो स्वर्ग प्रसन्न होता है।

स्वर्ग उत्तर देता है (आयतें 5, 6)

परमेश्वर चाहता है कि हम हर बात के लिए प्रार्थना करें: ''किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं'' (फिलिप्पियों 4:6)। ''यदि सोचना आवश्यक है, तो प्रार्थना भी आवश्यक है।''

परन्तु प्रकाशितवाक्य 8 के पहले भाग में विशेष प्रकार की प्रार्थना स्पष्टतया पवित्र लोगों द्वारा की जा रही थी। यानी यह उन लोगों की याचना जैसी थी जो ''वेदी के नीचे ... वध किए गए थे। ... हे स्वामी हे पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और पृथ्वी के रहने वालों से हमारे लोहू का पलटा कब तक न लेगा?'' (6:9, 10)। इस निष्कर्ष पर हम प्रार्थना के बाद की बातों के कारण पहुंचते हैं:

> और स्वर्गदूत ने धूपदान लेकर उन में वेदी की आग भरी, और पृथ्वी पर डाल दी,[32]
> और गर्जन और शब्द और बिजलियां और भुईंडोल होने लगा।
> और वे सातों स्वर्गदूत जिनके पास सात तुरहियां थीं, फूंकने को तैयार हुए (आयतें 5, 6)।

यहां ''पृथ्वी'' शब्द नया जन्म न पाने वालों के लिए है।[33] शहीद होने वालों ने पूछा था, ''तू ... *पृथ्वी के* रहने वालों से हमारे लहू का पलटा कब तक न लेगा।'' वेदी से आग लेकर ''पृथ्वी पर'' डाल देना उन लोगों को बदला देने का संकेत था, जो मसीही लोगों का विरोध करते थे।[34]

आग पृथ्वी पर पड़ने से ''गर्जन और शब्द और बिजलियां और भुईंडोल होने लगा।'' अध्याय 4 में हमने देखा था कि परमेश्वर के सिंहासन से ''बिजलियां और गर्जन निकलते हैं'' (आयत 5क)। अध्याय 6 में हमने देखा कि भुईंडोल उसे हिलाने का संकेत था जिसे लोग अडोल मानते थे।[35] इन शब्दों का मेल ईश्वरीय न्याय के विचार को लागू करती है।

इस सब से सात तुरहियों की नाटकीय चेतावनियां सुनाई दीं।[36] अविश्वासियों के लिए परमेश्वर का संदेश स्पष्ट था कि यदि तुम मेरे लोगों को हानि पहुंचाओगे तो तुम मुझे जवाब दोगे!

5 और 6 आयतों का संदेश आरम्भिक मसीही पाठकों की बहुत बड़ी आवश्यकता थी। ''उनके विरुद्ध सताव और उपहास के बड़े-बड़े तरीके अपनाए गए थे। उनके पास न

तो हथियार थे और न ही मत। उनके पास न पैसा था न प्रतिष्ठा।''[37] उनमें से कई इतना तो अवश्य पूछ रहे होंगे कि ''रोम की शक्ति के सामने हम सम्भव तौर पर क्या कर सकते हैं?'' प्रकाशितवाक्य 8 का उत्तर है, ''प्रार्थना करो!'' थॉमस टौरेंस ने ये जोशीले शब्द कहे थे:

> संसार के पीछे असली शक्तियां कौन सी हैं और हमारे भविष्य के गहरे भेद क्या हैं? चौंका देने वाला उत्तर है: पवित्र लोगों की प्रार्थना और परमेश्वर की आग। ... सारे अन्धकार और सारी शक्तियों से बढ़कर प्रभावकारी और शक्तिशाली संसार की किसी भी चीज़ से आधिक शक्तिशाली परमेश्वर की आग से दमकती और पृथ्वी पर डाली गई प्रार्थना की सामर्थ है।
>
> ... पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं और परमेश्वर की आग सारे संसार को चलाती है। वे संसार की सब से प्रभावकारी, सब से परेशान करने वाली, सब से क्रांतिकारी, सब से भयभीत करने वाली शक्तियां हैं, हम जो परमेश्वर की कलीसिया में हैं सचमुच परमेश्वर की सामर्थ ऐसे ही समझें! ...[38]

बाइबल सिखाती है कि जब मसीही लोग प्रार्थना करते हैं, तो स्वर्ग न केवल सुनता है, स्वर्ग न केवल प्रसन्न होता है,

– बल्कि स्वर्ग *उत्तर* भी देता है। परमेश्वर हमारी प्रार्थना का उत्तर देता है। यीशु ने कहा, ''मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा। ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे। खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा'' (मत्ती 7:7)। याकूब ने लिखा है, ''धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है'' (याकूब 5:16ख)। यूहन्ना ने साफ़ कहा कि ''जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उससे मिलता है'' (1 यूहन्ना 3:22क)। उसने और कहा:

> और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। और जब हम जानते हैं, कि जो कुछ मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हमने उससे मांगा, वह पाया है (1 यूहन्ना 5:14, 15)।

क्या आप इन आयतों को मानते हैं? क्या हम प्रार्थना की सामर्थ में विश्वास रखते हैं?

प्रकाशितवाक्य 8:1–6 ने कई लेखकों को प्रार्थना पर ये टिप्पणियां देने के लिए प्रेरित किया है:

> [प्रार्थना मसीही व्यक्ति का] परमेश्वर के शासन में सीधे भागीदारी का एक रूप है।[39]

> इस पृथ्वी पर सबसे प्रभावशाली सामर्थ प्रार्थना की ही है; और पृथ्वी की कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं है जिसका मसीही प्रार्थनाओं से कोई सम्बन्ध न हो, चाहे लोग उन्हें करते हों या न।[40]

> [बुराई के साथ युद्ध में] मसीही व्यक्ति का गुप्त हथियार विश्वास से की गई प्रार्थना का ईश्वरीय उत्तर है।[41]

[जब परेशानी आती है,] प्रार्थना ... सब से व्यावहारिक बात है जिससे हर कोई कर सकता है।[42]

एक बार दो लड़के शर्त लगा रहे थे कि कौन सबसे लम्बी छलांग लगाता है। बाद में, जीतने वाले लड़के ने अव्वल आने पर पुरस्कार लौटाना चाहा। उसका कहना था, ''मैंने चलाकी की थी। छलांग लगाने से मैंने पहले प्रार्थना कर ली थी।'' उसने कोई चलाकी नहीं की थी, परन्तु उसे यह समझ नहीं थी कि परमेश्वर की सहायता से उसने वह कर दिखाया जो वह अपने आप नहीं कर सकता था। यह ऐसा सबक है जो हम सब को *सीखने* की आवश्यकता है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि जब मसीही लोग प्रार्थना करते हैं, तो स्वर्ग उसका उत्तर देता है!

सारांश

भजन संहिता 55 में दाऊद ने परमेश्वर के सामने अपना हृदय खोल दिया:

> मेरी ओर ध्यान देकर, मुझे उत्तर दे; मैं चिन्ता के मारे छटपटाता हूं और व्याकुल रहता हूं। क्योंकि शत्रु कोलाहल और दुष्ट उपद्रव कर रहें हैं; वे मुझ पर दोषारोपण करते हैं, और क्रोध में आकर मुझे सताते हैं।
>
> मेरा मन भीतर ही भीतर संकट में है, और मृत्यु का भय मुझ में समा गया है। भय और कंपकंपी ने मुझे पकड़ लिया है, और भय के कारण मेरे रोएं-रोएं खड़े हो गए हैं। और मैं ने कहा, भला होता कि मेरे कबूतर के से पंख होते तो मैं उड़ जाता और विश्राम पाता (आयतें 2-6)!

क्या आप ने भी दाऊद की तरह महसूस किया है, जो जीवन की परेशानियों से दुखी था? भजनकार के ढंग को सुनें कि उसने आगे क्या कहा: ''परन्तु मैं तो परमेश्वर को पुकारूंगा; और यहोवा मुझे बचा लेगा। सांझ को, भोर को, दोपहर को, तीनों पहर में दोहाई दूंगा और कराहता रहूंगा, और वह मेरा शब्द सुन लेगा'' (आयतें 16, 17)। उसका निष्कर्ष क्या था? ''अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह मुझे सम्भालेगा; वह धर्मी को कभी टलने न देगा'' (आयत 22)। दाऊद का वचन हमारे पाठ की मूल सच्चाइयों की समझ थी कि जब परमेश्वर के लोग प्रार्थना करते हैं, तो स्वर्ग उनकी सुनता है, स्वर्ग प्रसन्न होता है, और स्वर्ग उत्तर देता है।

इन सच्चाइयों को स्वीकार करने से हमारे जीवन प्रभावित होंगे। एक परिणाम तो यह होगा कि हम और प्रार्थना करने लगेंगे। एक और परिणाम यह होना चाहिए कि यह देखने के लिए कि परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध कैसा है, हम अपने जीवनों की जांच करेंगे। ''यहोवा दुष्टों से दूर रहता है, परन्तु धर्मियों की प्रार्थना सुनता है'' (नीतिवचन 15:29)। परमेश्वर को ''हे पिता'' कहने से पहले आपके लिए जल और आत्मा से बपतिस्मा लेना आवश्यक है (यूहन्ना 3:3, 5)। यानी अपने पापों की क्षमा के लिए आपको पानी में डुबकी

लेनी होगी (प्रेरितों 2:38)।

यदि आप को परमेश्वर की संतान बनने की आवश्यकता है या यदि भटका हुआ बालक होने के कारण आपको प्रभु के पास वापस आने की आवश्यकता है, तो मैं प्रार्थना करता हूं कि आज ही आप आ जाएं।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

थॉमस टौरेंस द्वारा इस्तेमाल किया गया वाक्यांश ''द प्रेयर्स आफ़ द सेंट्स एण्ड द फ़ायर ऑफ़ गॉड।'' इस पाठ के लिए अच्छा शीर्षक हो सकता है।[43] अरल वाल्मर ने इसे चौंकाने वाला शीर्षक दिया था: ''द साइलेंस एण्ड द साउंड''[44] विलियम बार्कले ने ''प्रार्थना का सन्नाटा और गर्जन'' वाक्यांश का इस्तमेमाल किया।[45]

टिप्पणियां

[1]कुछ टीकाकार जोर देते हैं कि सातवीं मुहर का ज़ोर आयत 1 में पूरा होता है और सन्नाटा केवल पहली मुहर के टूटने पर ही होता है। हो सकता है, परन्तु संदर्भ इस विचार के पक्ष में है कि सातवीं मुहर का कार्य जारी रहता है। पहले तो, आयत 2 नए पद्य से आरम्भ नहीं होती; बल्कि 1 और 2 आयतें एक ही पद्य का भाग हैं। दूसरा, आयत 5 की वातावरणीय भाषा सातवीं तुरही फूंके जाने के चरम (11:19) और सातवें कटोरे के उण्डेले जाने (16:18-21) से मेल खाती है। इससे यह संकेत मिलेगा कि सातवीं मुहर कम से कम आयत 5 से होकर जाती है। जिसमें आयत 2 में सात तुरहियां स्वर्ग दूतों को दिया जाना शामिल है। [2]फ्रैंक पैक, *रैवलेशन,* भाग 1, द लिविंग वर्ड सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965), 73. [3]जिम मैक्गुइगन, *द बुंक ऑफ़ रैवलेशन, लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सेस, 1976), 97-98. [4]मार्टिन किड्डल, द *रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन,* द मॉफ़ट न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री सीरीज़ (न्यू यार्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, पब्लिशर्स, 1940), 128-29. यदि आप अमेरिका में रहते हैं तो आप टीवी पर खेल-कूद की घटनाओं वाला ''री-पले'' का उदाहरण दे सकते हैं: आम तौर पर हम एक ही मैच या खेल को कई बार देख लेते हैं, परन्तु अलग-अलग दृष्टिकोण से। [5]वही। [6]इस विकास के महत्व पर आगे ज़ोर दिया जाएगा। [7]अध्याय 7 में कहा गया था कि असंख्य भीड़ की आराधना ''दिन रात'' (आयत 15) जारी रही, अन्य शब्दों में, कि यह बढ़ती रही। इससे अचानक हुआ सन्नाटा और भी चौंकाने वाला होना था। [8]''घड़ी'' शब्द के सांकेतिक महत्व पर *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''यहां अजगर हैं'' में थोड़ा सा बताया गया है, परन्तु ''आधा घण्टा'' का उल्लेख नहीं है। इस बात में कि यूहन्ना ने कहा कि यह ''आधे घण्टे *तक,*'' इस शब्द का कोई ''गहरा'' संक्षेप अर्थ दिखाई नहीं देता। यह वाक्यांश केवल नाटकीय प्रभाव देने के लिए थोड़ी देर के निश्चित समय तक सन्नाटा कहा गया है। [9]संगीत में *स्वर* के लिए पूरे स्वर, आधे स्वर, चौथाई स्वर, आठवां स्वर और सोलहवां स्वर की तरह पूरा ठहराव, आधा ठहराव, चौथा ठहराव, आठवां ठहराव और सोलहवां ठहराव होता है। स्वर की किस्म इस से तय होती है कि धुन कितनी लम्बी है, और ठहराव की किस्म इससे तय होती है कि खामोश कितनी देर रहना है (यानी कितनी देर तक गाना बन्द करना है)। [10]सन्नाटे के और उद्देश्यों पर भी विचार किया गया है: (1) तुरहियों का मुख्य उद्देश्य दुष्टों को पश्चात्ताप कराना है, इसलिए कुछ लोगों को लगता है कि आधे घण्टे के सन्नाटे का संकेत मनुष्यजाति के साथ परमेश्वर का धीरज है, जैसे उसने मनुष्यों को मन फिराने का समय दिया। (2) यह मानने वाले कि आयत 1 में सातवीं मुहर का पूरा कार्य कहता है कि सन्नाटा हमें याद दिलाता है कि अनन्तकाल

की कई बातें हैं, जिन्हें हम नहीं जानते और न ही जान सकते हैं। (3) कुछ लोगों को सन्नाटे का समय गम्भीर श्रद्धा का लगता है।

[11]जी. आर. बिसले-मुर्रे, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू सैंचुरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1974), 150. [12]विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1976) 40. [13]पैक, 73. यूजीन एच. पीटरसन, *रिवसर्ड थंडर* (सैन फ्रैंसिस्को: हार्पर कोलिन्स पब्लिशर्स, 1988), 87. [14]''तालमुड में स्वर्गदूतों, को गाने से रोकने का उल्लेख है ... ताकि इस्राएल की महिमा स्वर्ग में सुनाई दे सके'' (रॉबर्ट मांडस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस कं., 1977], 179)। [15]पीटरसन, 93. [16]एल्बर्ट एच. बाल्डिंगर, *प्रीचिंग फ्रॉम रैवलेशन:* टाइम्ली मैसेजस फ़ॉर ट्रबल्ड हार्ट्स (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 40. [17]पीटरसन, 94. [18]सात स्वर्गदूतों पर इस शृंखला की अगली पुस्तक में चर्चा की जाएगी। [19]कुछ लोगों का विचार है कि यह सब पूरी खामोशी में सातवीं मुहर के खुलने (8:1) और गर्जन होने के दौरान (8:5) हुआ। यदि ऐसा हुआ तो इस से उस कार्य का प्रभाव बढ़ गया होगा। [20]इस तथ्य ने कि स्वर्गदूत को ''*बहुत* धूप'' दिया गया बहुत से टीकाकारों को विश्वास दिला दिया है कि यह संकेत यहूदियों के प्रायश्चित के दिन से लिया गया है, क्योंकि प्रायश्चित के दिन अन्य दिनों की अपेक्षा पवित्र स्थान में अधिक धूप ले जाई जाती थी।

[21]कुछ लोगों ने इन आयतों का इस्तेमाल यह सिखाने की कोशिश के लिए किया है कि स्वर्गदूत मसीही लोगों के लिए सिफ़ारिश करते हैं। परन्तु धूप स्वर्गदूत ने नहीं दी थी, बल्कि उसे *दी गई* थी। स्वर्गदूत तो केवल किसी सेवक को दिया जाने वाला काम कर रहा था, यानी वह प्रकाशितवाक्य की अन्य बातों की तरह सिंहासन से मिले आदेश का पालन कर रहा था।[22]यह दृश्य अध्याय 6 से जुड़ा है, जहां शहीद होने वाले पुकार रहे थे, ''कब तक?'' (आयतें 9, 10) फिर भी ध्यान दें कि यहां पर प्रार्थनाएं ''*सब* पवित्र लोगों की'' हैं, न कि केवल शहीदों की। [23]यह दृश्य अध्याय 6 वाले दृश्य से जुड़ा है, जहां शहीद होने वालों के प्राण ''वेदी के नीचे'' (आयत 9) थे। 6:9-11 पर चर्चा करते हुए हमने सुझाव दिया था कि उस दृश्य में वेदी पुराने नियम वाली बलिदान की वेदी से मिलती थी। उस समय, हमने देखा था कि स्पष्टतया प्रकाशितवाक्य में केवल एक वेदी का उल्लेख है, जिसे कभी धूप की सोने की वेदी और कभी पीतल की वेदी कहा जाता है। माउंस ने कहा है, ''ऐसा कोई कारण नहीं है कि यूहन्ना के दर्शन वाली दोनों [वेदियां] मिले न'' (157)। 8:1-5 में वेदी के सम्बन्ध में पैक ने लिखा है, ''यह संदेहपूर्ण है कि दो अलग-अलग वेदियां इन आयतों में हैं, परन्तु सम्भवतया सोने की वेदी और होमबलि की वेदी दोनों की विशेषताएं इस वेदी से मिला दी जाती हैं'' (74)। अध्याय 6 वाली वेदी के मुकाबले अध्याय 8 वाली वेदी में धूप की वेदी वाली अधिक विशेषताएं हैं।[24]''पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं'' वाक्यांश पर टिप्पणियों के लिए, इस पुस्तक में ''मेमना योग्य है'' पाठ में 5:8 पर नोट्स देखें। [25]KJV में इसे ''परम पवित्र स्थान'' कहा गया है। [26]बलिदान की वेदी पर जलते कोयले रहते थे, जब कि धूप की वेदी पर नहीं; इसलिए इन आयतों वाली वेदी सम्भवतया बलिदान की वेदी थी। [27]NASB में इसे ''साक्षी का संदूक'' कहा गया है। [28]धूपदानी परम पवित्र स्थान से इतना जुड़ी हुई थी कि इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने परम पवित्र स्थान के *भीतर* की सोने की वेदी की तस्वीर बना दी (देखें इब्रानियों 9:3,4)। [29]याद रखें कि यह संकेत है। इस वचन में धूप का सांकेतिक इस्तेमाल आज आराधना में धूप के इस्तेमाल को उचित नहीं ठहरा देता। इस पुस्तक के ''मेमना योग्य है'' पाठ में 5:8 पर नोट्स देखें। [30]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 118.

[31]पुराने नियम में बलिदान से सम्बन्धित बार-बार आने वाला वाक्यांश ''sweet savour'' (KJV), ''soothing aroma'' (NASB), या ''pleasing aroma'' (NIV) है। (उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 8:21; निर्गमन 29:18; लैव्यव्यवस्था 1:9; गिनती 15:7; यहेजकेल 20:41) AB में इस वाक्यांश को इन शब्दों से विस्तार दिया गया है: ''a scent of satisfaction to His heart.'' जुड्सोनिया में अपनी क्लास में, पाठ के इस भाग में आकर मैंने छात्रों से पूछा कि उनके लिए ''मीठी महक'' का क्या अर्थ है। उत्तरों में ताज़ा कटी घास, छिले संतरे की सुगंध, ताज़ी पिसी कॉफ़ी, घर की बनी रोटी की महक, साफ़-सुथरा बच्चा,

मधु का छत्ता, ताज़ा पाई, और ज़ीरे की सुगंध थे। मैंने ध्यान दिया कि जैसे ये चीज़ें हमारे नाक को लगती हैं वैसे ही प्रार्थनाएं परमेश्वर को लगती हैं। [32]क्या स्वर्गदूत ने आग मिली धूप पृथ्वी पर डाली या केवल आग? वचन इस बात पर अस्पष्ट है, और इससे कुछ फर्क भी नहीं पड़ता। [33]इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''कलीसिया जिसने जो कुछ उससे बना पड़ा, किया'' में ''पृथ्वी पर रहने वाले'' वाक्यांश पर नोट्स देखें। [34]यह दृश्य यहेजकेल वाले दृश्य से मिलता है, जिसमें सन का वस्त्र पहने व्यक्ति को करूबों के बीच के अंगारे लेकर नगर पर बिखेर देने के लिए कहा गया था (यहेजकेल 10:2)। यह भाषा न्यायिक भाषा है। [35]इस पुस्तक में आए पाठ ''बड़ा दिन ... आ गया'' में 6:12 पर टिप्पणियां देखें। [36]इसी शृंखला की अगली पुस्तक में हम सात तुरहियों और उनके उद्देश्यों का अध्ययन करेंगे। [37]पीटरसन, 87. [38]थॉमस एफ़. टौरेंस, *द अपोकलिप्स टुडे* (ए ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 60-61. [39]डी. टी. नाइल्स, रेज़ सीइंग द इन्विज़िबल: ए स्टडी ऑफ़ रैवलेशन (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, पब्लिशर्स, 1961), 64. [40]बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रैवलेशन* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 182.

[41]होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 214. [42]पीटरसन, 95. [43]टौरेंस, 61. [44]अर्ल पाल्मर, *1, 2, 3 जॉन एण्ड रैवलेशन,* द कम्यूनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़, अंक 12 (डैलस: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 185-86. [45]बार्कले, 39-41.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. प्रकाशितवाक्य 8:1-6 कौन से तीन उद्देश्य पूरे करता है?
2. पाठ के अनुसार, सात तुरहियों के बारे में केवल सात मुहरें थीं, बल्कि उन्हें ''सातवीं मुहर का प्राथमिक कार्य माना जा सकता है।'' इसका क्या अर्थ है?
3. पाठ के अनुसार, मुहरों, तुरहियों और कटोरों का क्रम क्या है (कदापि चिंता न करें कि इस सब का क्या *अर्थ* है। अभी के लिए केवल इसे मन में रखें।)
4. *आप* को क्या लगता है कि प्रकाशितवाक्य 8:1 में ''सन्नाटा'' का क्या महत्व है? तम्बू और मन्दिर की आराधना में, सोने की वेदी क्या थी? तम्बू में सोने की वेदी और मन्दिर की आराधना में धूप जलाने के ढंग पर चर्चा करने को तैयार रहें।
5. क्या बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर एक मसीही की प्रार्थनाएं सुनता है?
7. पाठ के अनुसार, धूप को पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं से मिलाने का क्या महत्व है?
8. क्या प्रकाशितवाक्य 8 धूप की बात है का, अर्थ यह है कि आज हमें आराधना के एक भाग के रूप में धूप जलानी चाहिए?
9. परमेश्वर के पास ऊपर जाने वाली प्रार्थनाओं के लिए स्वर्ग का क्या उत्तर था?
10. क्या स्वर्ग *आज भी* मसीही लोगों की प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। क्या परमेश्वर ने कभी आप की प्रार्थनाओं का उत्तर दिया है।

धूप दान के पास एक स्वर्गदूत (8:4)